द्वितीय अध्याय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

द्वितीय अध्याय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1. प्रस्तावना :

शैक्षिक शोध के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य करते समय शोध विषय या समस्या के क्षेत्र से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। संबंधित शोध साहित्य में निर्धारित शोध समस्या एवं समस्या क्षेत्र से संबंधित पुस्तके, ज्ञानकोष, पत्र-पत्रिकाएँ, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबंध, अभिलेख आदि को सम्मिलित किया जाता हैं। इस सम्बन्धित शोध साहित्य के अध्ययन से शोधकर्ता को अपने शोध समस्या का निर्धारण, चरों का निर्धारण, शोध के उद्देश्य, शोध की परिकल्पनाएँ निर्धारित करने में महत्वपूर्ण सहायता होती है। तथा किसी समस्या से सम्बन्धित उद्देश्य एवं परिकल्पना की पुनरावृत्ति न होने में सहायता प्राप्त होती है जो कि, शोध की वास्तविकता को सही ढ़ंग से साध्य कर सके। यदि कोई शोधकर्ता अपने शोध समस्या से संबंधित साहित्य का अवलोकन किए बिना शोध कार्य करता है, तो यह शोध कार्य अंधेरे में दिए जलाने के बराबर होगा। जिससे कि शोध कार्य उचित दिशा में आगे नहीं बढायाँ जा सकता तथा इस दिशा में अपेक्षित सफलता प्राप्त हो सकती है। अतः आवश्यक है कि, शोध कार्य में उचित सफलता संबंधित शोध साहित्य के पुनरावलोकन एवं शोधकर्ता का अनुभव एवं जिज्ञासा पर निर्भर करता है।

2.2. संबंधित शोध साहित्य के अवलोकन का महत्व :

शोध समस्या का निर्धारण, समस्या विधान की रचना, तथा शोध कार्य से संबंधित समंक संकलन हेतु उपकरण का निर्माण करने में संबंधित शोध साहित्य का अवलोकन महत्वपूर्ण है।

1. अपने शोध समस्या से संबंधित जानकारी प्राप्त करने, अनुभव प्राप्त करने, एवं शोध कार्य को आगे बढ़ाने में शोध साहित्य का अवलोकन आवश्यक है।
2. अपनी शोध समस्या से संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगाया जा सकता है।
3. निर्धारित शोध समस्या की वास्तविक प्रवृत्ति को समझने के लिये संबंधित शोध साहित्य का अवलोकन आवश्यक है।
4. शोध कार्य हेतु प्रतिदर्श का निर्धारण, चरों का निर्धारण, सांख्यिकीय प्रतिविधियाँ तथा शोध कार्य को महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करने के लिए संबंधित साहित्य का अवलोकन आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्न संबंधित शोध साहित्य का पूनरावलोकन किया गया है :

2.3. संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित अध्ययन :

☞ **एस. पंडया और एस. कोठारी :**

'कार्यकारी अधिकारियों के संवेगात्मक बुद्धि और ए/बी व्यक्तित्व के प्रकारों का अधिगम शैली पर पड़नेवाले प्रभावों का अध्ययन'

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता का मुख्य उद्देश्य कार्यकारी अधिकारियों के संवेगात्मक बुद्धि और ए/बी व्यक्तित्व प्रकार का अधिगम शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। गौण उद्देश्य यह है कि, व्यवहार में कौनसी अधिगम शैली का प्रयोग करते है। जिसके लिए शोधकर्ता ने एक ट्रेनिंग प्रोगाम का आयोजन किया।

शोधकार्य में प्रतिदर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि से किया गया है। जिसमें दो उत्पादक कम्पनी के संगठन में से 50-50 कार्यकारी अधिकारियों को चुना गया। अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करने के लिए डेनियन गोलमेन (1995) के द्वारा निर्मित परीक्षण का उपयोग किया गया है। ए/बी व्यक्तित्व के प्रकारों का अध्ययन करने के

लिए फाईडमेन और रोजनमेन (1974) के द्वारा निर्मित इनवेन्ट्री का उपयोग किया, अधिगम शैली का अध्ययन करने के लिए हेनरी और म्मफोर्ड के द्वारा निर्मित प्रश्न सूचि का प्रयोग किया गया।

इस अध्ययन से यह प्रदर्शित होता है कि, संवगोत्मक बुद्धिस्तर एवं व्यक्तित्व के ए/बी प्रकारों का अधिगम शैली पर सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है। जो उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले है वह सैद्धान्तिक अधिगम शैली का उपयोग करते है। जो मध्यम संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति है वह व्यवहारवादी अधिगमशैली का उपयोग करते है। निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति की अधिगम शैली में बिखराव युक्त रूचि प्रदर्शित करते हैं। साथ में 'ए' प्रकार के व्यक्तित्व वाले रिफलेकहडे अधिगम की ओर झुकते है और 'बी' प्रकार के व्यक्तित्व वाले सक्रिय अधिगम शैली को चुनते है।

☞ **एस. औदिच्य और पी. जैन :**

यह शोधकार्य संयुक्त और विभक्त परिवार के वयस्क लड़के और लड़कियों के उपर किया गया है। जिसमें 120 लड़के, 120 लड़कियों संयुक्त परिवार से तथा 120 लड़के और 120 लड़कियां विभिन्न परिवार से ली गई है। यह लड़के और लड़कियों 14-18 साल तक के लिए गये। इस का निष्कर्ष यह आया कि, लड़के-लड़कियों से संवेगात्मक रुप से ज्यादा परिपक्व होते है। इस से आगे विभक्त परिवार तथा संयुक्त परिवार के लड़कों में संयुक्त परिवार के लड़के संवेगात्मक रुप से ज्यादा परिपक्व है और विभक्त तथा संयुक्त परिवार की लड़कियों में विभक्त परिवार की लड़कियाँ संवेगात्मक रुप से ज्यादा परिपक्व है।

☞ **रुकसाना नसर और जीनत नसर :**

उपरोक्त शोधकार्य में न्यादर्श के रूप में महाविद्यालय के विद्यार्थियों को लिया गया है। शोधकार्य में साबित किया है कि, किसी व्यक्ति की पूर्ण रूप से सफल होने के लिए सिर्फ बुद्धिमान होना पूर्ण नहीं

है। संवेगात्मक बुद्धि स्तर तथा आंतरशक्ति उसकी सफलता को प्राप्त करने में तथा अपनी संस्थागत सफलता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण है।

The present paper aims to equivalent with the relationship between emotional Intelligence and creativity in college students.

2.4. समायोजन से संबंधित अध्ययन :

☞ **खान एस.बी. (1969) :**

खान एस.बी. ने शैक्षणिक उपलब्धि के प्रभावी कारकों का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, शिक्षा पध्धति, समायोजन की आवश्यकता, उपलब्धि की चिंताओं का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोध कार्य हेतु 509 छात्र तथा 529 छात्रा का चयन किया गया तथा 122 तथ्यों के आधार पर शोध कार्य किया गया। निष्कर्षतयः विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिवृत्ति, शिक्षा पद्धत्ति, समायोजन उपलब्धि की चिंता का प्रभाव प्राप्त हुआ। उपर्युक्त सभी कारकों में बालिकाओं का उपलब्धि स्तर, शैक्षणिक उपलब्धि की सोच बालकों की अपेक्षा उच्च प्राप्त हुई।

☞ **पण्डित के.एम. (1973) :**

प्रस्तुत शोध में प्रतिभाशाली बालकों की समायोजन समस्याओं एवं असंतोष की प्रतिक्रिया का अध्ययन किया। अध्ययन उपरान्त निष्कर्षतयः प्रतिभाशाली बच्चों में कम प्रतिभाशाली बच्चों की अपेक्षा कम समायोजनिक समस्या प्राप्त हुई। दोनों समूहों की बालिका अपने समूह के शेष भाग की अपेक्षा कम समायोजनिक समस्याओं से ग्रसित पायी गयी। प्रतिभाशाली बालिकाएँ, बालकों की अपेक्षा केवल सामाजिक समायोजन को छोड़कर बाकी सभी क्षेत्र में सुसमायोजित पाई गई तथा प्रतिभाशाली बालक, बालिकाओं की अपेक्षा अधिक समायोजनिक समस्याओं से ग्रसित पाये गये।

☞ गोस्वामी (1980) :

गोस्वामी ने विद्यालय जाने वाली किशोर बालिकाओं की समायोजन समस्या का अध्ययन किया। निष्कर्षतयः आयु वृद्धि के साथ बालिकाओं में समायोजन समस्याओं में वृद्धि पायी गयी तथा परिणामों के विश्लेषण के आधार पर यह भी ज्ञात हुआ कि, आठवीं तथा नववीं कक्षा की बालिकाओं के समायोजन का मध्यमान एवं कक्षा आठवीं और दसवीं की बालिकाओं के समायोजन के मध्यमान के बीच 0.01 पर अंतर सार्थक प्राप्त हुआ। किन्तु कक्षा नवमी व दसवीं की बालिकाओं के बीच समयोजन का अन्तर सार्थक नहीं प्राप्त हुआ।

☞ शालु और आदित्य एस. (2006) :

शालु और आदित्य एस. ने ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् किशोर अवस्था के बालक एवं बालिकाओं के विद्यालय सामाजस्य (कारक–सामाजिक, भावनात्मक, शैक्षणिक) का तुलनात्मक अध्ययन किया, संधि कार्य में शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् 14–16 वर्ष के आठवीं से दसवीं तक के 30 बालक एवं 30 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया। सामंजस्य स्तर का मापन करने हेतु सिन्हा वति सिंह के द्वारा निर्मित सामंजस्य मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्षतयः बालक तथा बालिकाओं का विद्यालय में भावनात्मक सामंजस्य में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ। जबकि, सामाजिक एवं शैक्षणिक स्तर पर सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ।

2.5. शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययन :

➢ नायर ऊषा, जागलेकर के.सी. (1992) :

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने बालिकाओं की प्रारंभिक शिक्षा में निरंतरता एवं अनिरंतरता (अवरोध) के तथ्यों का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध के उद्देश्य प्रारंभिक शिक्षा से बालिकाओं के अलगांव, शालात्यागी निरंतरता होने के कारणों की पहचान करना। 6 से 14 आयु

वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा को लोकव्यापी करने हेतु व्यूह रचना तैयार करने का आंकलन किया गया। निष्कर्षतयः बालकों की अच्छी आर्थिक स्थिति, बालिकाओं की शिक्षा, अभिप्रेरणा एवं परिवार का शिक्षा के प्रति सहयोगात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में निरंतरता लाता है, घरेलू कार्य व छोटे भाई बहनों की देखभाल, कम उम्र के विवाह, गरीबी, लिंगभेद, पर्दाप्रथा आदि बालिकाओं के शालात्यागी होने के प्रमुख कारण है। लिंगभेद के कारण सामान्यतः बालक–बालिकाओं को शिक्षा व कार्यो से बालक की तुलना में कम महत्व दिया जाता है तथा बालिकाओं के अप्रवेशी होने का प्रमुख कारण लिंगभेद, सामाजिक मान्यता एवं शाला का निवास से दूर होना भी है। यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

➢ **बागड़े, उमेश तुकारामजी (2003) :**

उल्लेखित शोधकार्य में शोधकर्ता ने चंद्रपुर जिले के आदिवासी आश्रम–शाला एवं जिला परिषद् शालाओं के आदिवासी छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्षतयः आदिवासी आश्रम शालाओं की छात्र–छात्राओं एवं जिला परिषद शालाओं के छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ।